प्रातःक्लास 16/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः शालीग्रामों प्रति। यह तो सारे कल्प में एक ही बार होता है। यह भी तुम जानते हो और कोई जान न सके। मनुष्य उस रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अंत को बिल्कुल ही नहीं जानते। मनुष्य होकर और नहीं जानते तो जनावर ठहरे ना। यह भी जानते हैं स्थापना में विघ्न भी पड़ती है। इसको कहा जाता है ज्ञान–यज्ञ। बाप समझाते हैं इस पुरानी दुनियाँ में तुम जो कुछ देखते हो वह सभी स्वाहा हो जाना है। फिर उसमें ममत्व नहीं रखना चाहिए। बाप आकर पढ़ाते भी हैं नई दुनियाँ के लिए। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह है विश्यिस और वायसलेस वर्ल्ड का संगम। जबकि बदली होती है। नई दुनियाँ को कहा जाता है वायसलेस वर्ल्ड। आदि सनातन देवी–देवता धर्म ही था। यह तो बच्चे जानते हैं प्वाइन्ट्स बहुत समझने की है। बाप रात–दिन कहते रहते हैं बच्चों, तुमको बहुत गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। जहां तक बाप है पढ़ाई चलनी है। फिर पढ़ाई भी बंद हो जावेगी। इन बातों को तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जो फिर बाप–दादा ही जानते हैं। तुम भी नहीं जानते हो। कितने गिरते हैं। कितनी तकलीफ़ होती है। ऐसे नहीं सदैव पवित्र रह सकते हैं। पवित्र नहीं रहते हैं तो फिर सज़ा भी खानी पड़े। माला आठ दाने ही पास विद ऑनर होते हैं। फिर प्रजा भी बनते–बनते हैं। वह तो योगबल से बन न सके। यह बहुत ही समझने की बातें हैं। तुम कोई भी बेसमझ को समझाओ तो वह समझ थोड़े ही सकते हैं। टाइम लगता है। सो भी जितना बाप समझा सकते हैं उतना तुम नहीं। रिपोर्ट्स आदि जो आते हैं उनको बाप ही जानते हैं। फलाना विकार में गिर गया। यह हुआ। नाम तो नहीं बता सकते हैं। नाम बतावें तो फिर उनसे कोई बात करने भी पसंद नहीं करेंगे। सभी विकार की दृष्टि से देखेंगे। मुँहा पड़ जावेंगे। की कमाई चट हो जावेगी। यह तो जिसने धक्का खाया कैसे खाया वह तो बाप ही जाने। यह बड़ी गुप्त बातें हैं। वह तो बाप ही जानते हैं। तुम कहते हो– फलाना मिला, उनको तुमने बहुत ..... वह तुमको मदद कर सकते हैं; परंतु वह भी जब हाज़िर हो ना। समझो गवर्नर को तुम बहुत अच्छी रीत समझाते हो; परंतु वह थोड़े ही किसको समझा सकेंगे। कोई को समझावें तो मानेंगे ही नहीं। जिसको समझने का होगा वही समझेगा। दूसरे को थोड़े ही समझा सकेंगे। उनको सभी कहने लगेंगे यह क्या कहते हो। ब्रह्माकुमारियों ने माथा ख़राब कर दिया है। यह तो काँटों का जंगल है उनको हम मंगल बनाते हैं। मंगलम् भगवान विष्णु..... कहते हैं ना। यह श्लोक आदि सभी भक्ति मार्ग के हैं। मंगल तब हो जब विष्णु का राज्य होता है। विष्णु अवतरण भी दिखाते हैं। बाबा ने तो सभी कुछ देखा है। अनुभव है ना। सभी धर्म वाले को अच्छी रीत जानते हैं। पर्सनल बाप किसके शरीर में आवेंगे तो एक पर्सनालिटी भी चाहिए ना। तब कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में जबकि वह यहां का बड़ा अनुभवी होता है तब मैं प्रवेश करता हूँ। वह भी साधारण। पर्सनालिटी का मतलब यह नहीं कि राजा रजवारा(ड़ा) हैं। नहीं। इनको तो बहुत अनुभव है। इनके रथ में ही आता हूँ बहुत जन्मों के अंत में। सो तो जब कोई समझे कि यह भगवान की मत है। सभी भगवान के मत पर चलते हैं। तुमको समझाना पड़े यह राजधानी स्थापन होती है। माला बनती है। यह राजधाी कैसे स्थापन होती है, कोई राजा कोई रानी कोई कैसे बनते हैं यह भी बातें एक दिन में तो कोई समझ न सके। बेहद का बाप ही बेहद का वर्सा देते हैं। भगवान आकर समझाते हैं तो भी मुश्किल बहुत थोड़े पवित्र बनते हैं। बाकी कितने सज़ा खाते हैं। सज़ाएं खाकर प्रजा बनते हैं। राजाएं कितने, प्रजा कितने बनते हैं। यह सभी समझने में टाइम चाहिए और साथ–2 बहुत मीठा भी बनना है। कोई को भी दुःख नहीं देना है। बाप आते ही हैं सभी को सुख का रास्त बताने। दुःख से छुड़ाने आते हैं। तो फिर खुद किसको दुःख कैसे देंगे। यह सभी बातें तुम बच्चे समझते हो। बाहर वाले बड़ा मुश्किल समझते हैं। जो भी सम्बंधी आदि हैं उन सभी से ममत्व तोड़ देना है। घर में रहना है; परंतु नाम मात्र। यह तो बुद्धि में है कि यह तो पुरानी दुनियाँ है। सब खत्म हो जानी है; परंतु यह ख़्यालात भी सभी को थोड़े ही रहती है। जो अनन्य बच्चे हैं वह समझते हैं। वह भी

अभी सीखते, पुरुषार्थ करते रहते हैं। बहुत फ़ेल भी हो पड़ते हैं। माया की चकरी बहुत चलती है। वह भी बड़ी बलवान है; परंतु यह बातें और कोई थोड़े ही समझा सकते हैं। तुम्हारे पास आते हैं, समझने चाहते हैं यहां क्या होता है। इतने रिपोर्ट्स आदि क्यों आते हैं। अभी इन लोगों की तो बदली होती रहती है। तो फिर एक–एक को बैठ समझाना पड़े। यहां भी आते हैं, कोई अच्छा हुआ होगा तो झट कह देंगे हमको इनका सभी मालूम है। यह बहुत अच्छी संस्था है। राजधानी की स्थापना की बातें बड़ी गुह्य, गोपनीय हैं। बेहद का बाप बच्चों को मिला है तो कितना हर्षित होना चाहिए। हम विश्व का मालिक, देवताएं बनते हैं तो हमारे में दैवी गुण भी चाहिए। एमऑबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह है ही नई दुनियाँ का मालिक। तो यह है सबसे न्यारी बातें। मनुष्य तो समझ न सके। यह तुम सभी समझते हो। हम पढ़ते हैं। बेहद का बाप जो नॉलेजफुल है वह हमको पढ़ाते हैं। अमरपुरी अथवा हेविन में जाने के लिए यह नॉलेज मिलती है। आवेंगे वही जिन्होंने कल्प–2 राज्य लिया है कल्प पहले मुआफ़िक। अपनी हम राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह माला बन रहे(ी) है नम्बरवार। जैसे स्कूल में भी जो अच्छा पढ़ते हैं उनको स्कॉलरशिप मिलती है। वह तो है हद की बातें। तुमको मिलती हैं बेहद की। जो तुम बाप के मददगार बनते हो। वही ऊँच पद पाते हैं। वास्तव में तो मदद अपने को ही करनी है। पवित्र बनना है। हम जो सतोप्रधान थे वही फिर से बनना ज़रूर है। बाप को याद करना ज़रूर है। उठते–बैठते–चलते बाप को याद कर सकते हैं। जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। उनको बहुत रुचि से याद करना है; परंतु माया छोड़ती नहीं है। अनेक प्रकार के किस्म–2 के रिपोर्ट्स लिखते हैं। बाबा हमको माया के विकल्प बहुत आते हैं। बाप कहते हैं– यह तो युद्ध का मैदान है। 5 विकारों पर जीत पानी है बाप को याद करने से। यह भी तुम समझते हो हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप आकर के समझाते हैं। भक्ति मार्ग वाले कोई भी नहीं जानते हैं। यह तो पढ़ाई है। बाप कहते हैं– तुम पावन कैसे बनेंगे? तुम पावन थे फिर बनना है। देवताएं पावन थे ना। बच्चे जानते हैं हम स्टूडेन्ट्स पढ़ रहे हैं। भविष्य में फिर सूर्यवंशी राज्य में हम आवेंगे। इसके लिए पुरुषार्थ भी अच्छी रीत करना है। सारा मार्क्स के ऊपर है। रामचन्द्र–त्रेता में क्यों आया नापास हुआ। युद्ध के मैदान में फ़ेल हो गया। उन्होंने फिर युद्ध का नाम सुनकर तीर कमान आदि दे दिये हैं। क्या वहां बाहुबल की लड़ाई की थी जो तीर–कमान आदि चलाई। ऐसी कोई बात नहीं। यह सभी बूत बनाया हुआ है। तीर की चुहबनद बहुत तीखी होती है। उनमें ज़हर रहता है। आदमी को ही ख़त्म कर देते हैं। आगे वाणों की लड़ाई चलती थी। इस समय तक भी निशानियाँ हैं। कोई–2 चलाने में बड़े ही होशियार होते हैं जब तक मास के अंदर न जाये तब तक ज़हर फ़ेल न सके। इस लड़ाई आदि की अभी कोई बात ही नहीं। तुम जानते हो शिवबाबा ही ज्ञान का सागर है। उनका यह ज्ञान है जिससे हम यह पद पाते हैं। अभी बाप कहते हैं– देह सहित देह के सभी सम्बधों से ममत्व तोड़ना है। यह–यह सभी पुराना है। नई दुनियाँ में गोल्डेन एज्ड भारत था। कितना नाम मशहूर था। भारत का प्राचीन योग किसने और कब सिखाया यह किसको भी पता नहीं है। जब तक खुद न आये समझावे। यह है नई चीज़। कल्प पहले जो होता आया है वही रिपीट होगा। इसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। यह भी तुम जानते हो। यह भी लिचा(खा) हुआ है द्रौपदी ने पुकारा कि हमको नंगन करते हैं इससे बचाओ। बाप कहते हैं– अभी यह अंतिम जन्म पवित्र रहने से फिर 21 जन्म तुम कब नंगन नहीं होंगे। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। फिर भी सभी एक रस थोड़े ही पढ़ते हैं। रात–दिन का फ़र्क है। आते हैं पढ़ने लिए फिर थोड़ा पढ़कर गुम हो जाते हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं वह अपना अनुभव भी सुनाते हैं। कैसे हम आये थे कैसे हमने पवित्रता की प्र(ी)तज्ञा की। बाप कहते हैं– पवित्रता की प्रतिज्ञा कर फिर एक बार भी पतित बना तो की कमाई चट हो जावेगी। फिर वह अंदर में खाता रहेगा। किसको भी कह न सकेंगे कि बाप को याद करो। मूल बात बाबा विकार के लिए ही

पूछते हैं। यह तो पढ़ाई रेगुलर पढ़नी है। बाप कहते हैं– हम तुमको नई–2 बात सुनाता हूँ। तुम हो स्टूडेन्ट्। भगवान पढ़ाते हैं। भगवान के तुम स्टूडेन्ट्स हो। ऐसे ऊँच ते ऊँच पढ़ाई को तो एक दिन भी मिस न करनी चाहिए। एक दिन भी मुरली न सुनी तो फिर वह ऐबसेंट पड़ जाता है। अच्छे–2 महारथी भी ऐबसेंट हो जाते हैं। वह तो समझते हैं हम सभी कुछ जानते हैं। न पढ़ा तो क्या हुआ। अरे ऐबसेंट पड़ जावेंगे। नापास हो जावेंगे। बाप खुद कहते हैं ऐसे–2 प्वाइन्ट्स रोज़ सुनाता हूँ जो समय पर समझाने में बहुत काम में आवेगा। न सुनेंगे तो फिर कैसे काम में लावेंगे। जहां तक जीना है अमृत पीना है। शिक्षा को धारण करना है। ऐबसेंट तो कब न होना चाहिए। यहां–वहां से ढूँढ़कर, कोई से लेकर भी मुरली पढ़नी चाहिए। बाबा जानते हैं बहुत बच्चे हैं अच्छे–2 नम्बरवन में जिनको गिनते हैं वह भी मुरली मिस कर देते हैं। अपना ही घमण्ड आ जाता है। अरे भगवान बाप पढ़ाते हैं दस में तो एक दिन भी मिस न होना चाहिए। ऐसी–2 गुह्य प्वाइन्ट्स निकलती हैं। जो तुम्हारा वा किसका भी कपाट खुल सकते हैं। आत्मा है, परमात्मा क्या है, कैसे पार्ट चलता है इस समझने में तो टाइम चाहिए। बाप तो कहते हैं हम सभी उड़ा देते हैं सूक्ष्मवतन भी उड़ देना है। पिछाड़ी में सिर्फ़ यही रहेगा अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो; परंतु अभी समझाना पड़ता है। पिछाड़ी की तो यही बात है। बाप को याद करते–2 चले जाना है। याद से ही तुम पवित्र बनते जाते हो। कितना बने हैं सो तो तुम समझ सकते हो। अपवित्र को ज़रूर पद भी कम मिलेगा। मुख्य सिर्फ़ आठ रत्न ही हैं। जो पास विद ऑनर हो जाते हैं। वह कुछ भी सज़ा नहीं खाते हैं। यह बड़ी महीन बातें हैं। कितनी ऊँच पढ़ाई है। स्वपन्न में भी नहीं होगा कि हम देवता बन सकते हैं। कैसे बने थे यह तो किसको भी पता नहीं। अभी तुम समझते हो यह तो बहुत सहज है। सहज राजयोग से ही यह बने हैं। वह भी जब बाप आवे तब समझावे ना तुमको समझाने में कितनी मेहनत लगती है। तुम समझाते हो फिर भी कोई समझते नहीं हैं। जानते थोड़े ही हैं। मान लेवें तो झट चटक जावें। फिर नॉलेज भी चाहिए ना। राजाई मिलनी है इसमें भी कितना फ़र्क है। स्टूडेन्ट्स तो ढेर के ढेर हैं। बुद्धि में बैठ और किसको बैठ समझावे सो तो नम्बरवार है। कोई आदमी ऐसा आता है, अच्छे–2 समझाने वालों को बुलाया जाता है; क्योंकि खुद इतना समझदार नहीं बने हैं। इसमें है मेहनत गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो बाप कहते हैं– भल कुछ भी हो तुमको जो चाहिए सो करो; परंतु मुझे याद करो। वह अपना ऐसा प्रबंध निकालो। काम आदि करते हुये भी तुम (मु)झे याद कर सकते हो। बाप को याद करने से तुम बहुत पदमभाग्शाली बनते हो। उनके सामने तो वह धंधा आदि कुछ काम के नहीं। कुछ भी काम में आने वाले चीज़ नहीं। फिर करना तो पड़ता है ना। यह कब भी ख़्याल न आना चाहिए हम शिवबाबा को देते हैं। अरे तुम तो पदमा–पदमपति बनते हो। देने का ख़्याल आया तो ताकत कम हो जाती है। हम तो शिवबाबा से पदम लेते हैं। यह तो हम अपनी ही कमाई करते हैं। मनुष्य दानपुण्य ईश्वर अर्थ करते हैं लेने लिए। तो वह देना थोड़े ही हुआ। भगवान तो दाता है ना। दूसरे जन्म में कितना देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। भक्ति मार्ग में है ही अल्पकाल का सुख। तुम तो जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद के सुख का वर्सा पाते हैं। सन्यासी तो सुख को मानते ही नहीं। वह तो कह देते काग विष्टा समान सुख है। वह फिर दूसरे को सुख दे कैसे सकेंगे। वह सुख के दुनियां के लिए कब राजयोग सिखला न सके। भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बना न सके। श्रेष्ठाचारी तो देवताएं ही गाये हुये हैं। आज–कल दुनियां में तो झूठ ही झूठ है। सच्च की रत्ती नहीं। यह भी नई बात नहीं। बाप हर 5000 वर्ष बाद आकर यह समझाते हैं। भक्ति मार्ग के गुरु लोग तुमको क्या–2 सुनाते हैं। कितने शास्त्र आदि पढ़े हैं। भक्ति मार्ग में शास्त्र आदि पढ़ते ज़रूर हैं। भक्ति भी की है यह सभी कर्म–काण्ड के वधी के शास्त्र। तुमको कोई बोले शास्त्र पढ़े हो? बोलो, हाँ। हाँ–हाँ। हम तो तुमको सच्च बताते हैं। 2500 वर्ष हमने शास्त्र पढ़ी(ढ़े) हैं, तुम तो सिफ़ इस एक जन्म के लिए पूछते हो; लेकिन हम 2500 वर्ष

पढ़े हैं। कितना अच्छा एक्युरेट उत्तर तुम देते हो। सुनकर ही वायरे हो जावेंगे; परंतु उन्हों क(ी) बुद्धि में कुछ बैठता थोड़े ही है। तुम कहते हो ज़रूर अपने ही अनुभव से। तुम प्रश्न का उत्तर भी दे सकते हो। कहेंगे इसने तो यह नई बात सुनाई। बोलो, हम तो आधा कल्प से शास्त्र आदि पढ़ते हैं। जन्म–जन्मांतर, कल्प–कल्पांतर हम शास्त्र ही पढ़ते आये हैं। तो वह झट संतुष्ट हो जावेंगे। बाप आते ही हैं ज्ञान देने के लिए। ज्ञान से ही सद्गति होती है। शास्त्र आदि पढ़ने से क्या फायदा। दुगर्ति। भारत का हाल देखो कैसा है। चाहते हैं स्वर्ग़ हो। सो तो एक बाप ही स्थापन करते हैं। स्वर्ग़ था ज़रूर। अभी नहीं है। यह तुम किसको भी समझ(ा) सकते हो। बोलो तुम्हारा धर्म ही अलग है। तुम स्वर्ग़ में तो आ नहीं सकते हो। ड्रामा में पार्ट ही नहीं। तुम्हारे लिए तो स्वर्ग़ अभी यहां ही है। अमेरिका में क्या लगा पड़ा है। क्या–2 सुनाते रहते हैं। उनको तो यह पता नहीं कि यह है मायाबी पैराडाईज़। कलियुग में पैराडाईज़ कहां से आया। यह सभी माया का पॉम्प है। जब माया का फुल पॉम्प होता है तब ही विनाश होता है। अभी बाप कहते हैं– मीठे–2 बच्चों आत्म(ा) अभिमानी बनो। मनुष्य जो उल्टे लटक पड़े हैं उनको सुल्टा करो। बोलो पहले अपन को आत्मा समझो। पीछे यह शरीर है। तुम अपन को शरीर समझ उल्ठ(ट)ा क्यों लटकते हो। उल्ठ(टा) उल्लू लटकते हैं। कोई ठीक काम न करते हैं तो कहते हैं ना तुमतो जैसे उल(लू) हो। उल्लू का बच्चा हो। है यर्थात् बात; परंतु यह तुम समझते हो बाप तुमको सुल्टा बना रहे हैं। आधा कल्प तुम स(सु)ल्टे बनते हो फिर आधा कल्प तुम सुल्टा(उल्टा)। अच्छ(ा) आदि में मनमनाभव फिर अंत में भी कहते हैं मनमनाभव। मूल बात ही यह है। बाप को याद करो। तुमको पावन बनना है। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। अंदर में तुम जानते हो हम सभी आत्माएं हैं। बाप कहते हैं– अपन को आत्मा मुझ बाप को याद करो। पुरुषार्थ करते–2 सम्पूर्ण बनना है अंत में। जिसने जितनी मेहनत की होगी वही करेंगे। फिर कल्प बाद भी वही करेंगे। यह घोड़ दौड़ है। यह है राजस्व अश्व मेघ यज्ञ। इस शरीर रूपी घोड़े को इनमें स्वाहा करना है। बाप कहते हैं– मामेकं याद करो। यह सभी इस यज्ञ में स्वाहा हो जावेंगे। शरीर ही स्वाहा होंगे। आत्मा तो स्वाहा हो नहीं सकती है। हम आत्मा अविनाशी हैं। यह देह विनाशी है। बाप आये ही हैं आत्माओं को पावन बनाने। स्वाहा कराने। कचड़–पट्टी को आग में जलाते हैं ना। इस समय सभी हैं तमोप्रधान पतित। इनको कहा जाता है नर्क। वह है स्वर्ग़। यह बेहद का यज्ञ है। इसमें बेहद की पुरानी दुनियाँ स्वाहा होती है। फिर ऐसी दुनियाँ से दिल क्यों लगावें। अभी बाप को और नई दुनियाँ को याद करो। बस। यही फुर्णा रखना है। तो पाप कट जाये। तकलीफ तो कुछ नहीं। हठयोग आदि की तो कोई बात ही नहीं। यह तो नॉलेज है। भक्ति मार्ग में तो गुरु लोग शिक्षा देते हैं कृष्ण को याद करो। गणेश के चित्र को याद करो। काम–काज धंधा आदि करते बुद्धि योग उसमें होगा। ऐसे थोड़े ही गुरु ने कहा है कब–कब याद करो। नहीं निरंतर याद करते हैं। इसमें भी बाप कहते हैं– मामेकं याद करो। कैसे करो वह भी युक्ति बतलाते हैं। नहीं तो पद कम हो जावेगा। यह है बेहद का खेल जो बाप बैठ समझाते हैं। यह सारी रचना कैसे रची हुई है पतित से पावन कैसे बनते हैं यह बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप ही आकर सभी को सुखी कर देते हैं। चाहते तो सभी हैं विश्व में शान्ति हो। शान्तिदेवा..... सो तो एक बाप ही स्थापन करते हैं। सच्ची–2 प्राईज़ तुमको मिलती है। तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम जानते हो अभी जो करोड़ पति हैं वह सभी ग़रीब बन जावेंगे। विनाश होना है ना। वारा–जमारा है (कभी इसका टर्न–कभी उसक(ा) टर्न)। साहूकार ग़रीब, गरीब साहूकार बनते हैं। अभी जो साहूकार हैं उन्हों को धन में बहुत ही ममत्व है। तुम जानते हो यह पाई पैसे की है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद–प्यार गुड मॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

बाप और स्वर्ग़ को बादशाही याद है?